डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना, मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–16 मई, 2020)

प्रयोगवाद और नयी कविता में अंतर

प्रयोगवाद का जहां अंत होता है, वहीं से नयी कविता की षुरुआत होती है। आजादी से पूर्व प्रगतिवाद के बाद 'तार सप्तक' (1943 ई0) के प्रकाषन से कविता का ढ़ांचा पूरी तरह बदल कर एक नये तेवर में प्रस्तुत हुआ। इसमें पहली बार आधुनिकता का दर्षन और परंपरा एवं इतिहास से सीधा मुठभेड़ होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से 'नयी कविता' भारत की आजादी के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा जाता है, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये षिल्प विधान का अन्वेषण किया गया। वैसे तो नयी कविता के आरंभ को लेकर विद्वानों में मतभेद है, लेकिन आमतौर पर 'दूसरा सप्तक' के प्रकाषन वर्ष 1951 ई0 से नयी कविता का प्रारंभ माना जाता है। इसका तर्क यह है कि दूसरा सप्तक के प्रायः कवियों ने अपने वक्तव्यों में अपनी कविता को 'नयी कविता' कहा है।

हिन्दी के प्रायः विद्वान विचारकों की मान्यता में प्रयोगवाद का विकास और विस्तार ही नयी कविता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'नयी कविता' षब्द का प्रयोग एक विषिष्ट काव्यधारा के रूप में किया जाता है। प्रयोगवाद और नयी कविता दोनों आंदोलनों के प्रवर्तक अज्ञेय माने जाते हैं। प्रयोगवाद के कवियों में मुख्य रूप से 'तारसप्तक' में संकलित कवि अज्ञेय, भारत भूषण अग्रवाल, मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर, नेमिचन्द्र जैन और रामविलास षर्मा हैं। नयी कविता के कवियों में आमतौर पर दूसरा और तीसरा सप्तक में संकलित कवियों को माना जाता है। दूसरा सप्तक के कवि हैं– रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेष मेहता, षमषेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, षकुंतला माथुर और हरि नारायण व्यास मुख्य हैं। 'तीसरा सप्तक' के कवियों में कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण षाही, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्स्यायन हैं। अन्य कवियों में मुख्य हैं– श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेन्द्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अषोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले आदि। 'तीसरा सप्तक' (1959 ई0) का प्रकाषन वर्ष नयी कविता के विकास का उत्कर्ष काल है।

प्रयोगवाद का सामान्य अर्थ है 'जीवन के प्रत्येक क्षेत्र या नयी दिषा में नये सत्य एवं अर्थ को पाने के लिए निरन्तर खोज का प्रयास जारी रखना। कविता के क्षेत्र में पूर्ववर्ती छायावादी और प्रगतिवादी कविता की एकरूपता के खिलाफ नवीन युग सापेक्ष चेतना की अभिव्यक्ति। नये भावों, नयी अनुभूतियों और नये अर्थ को पाने के लिए पुराने घिसे–पिटे षब्दों, बिंबों, प्रतीकों की जगह नये षब्दों, बिंबों, प्रतीकों के माध्यम से नये प्रयोग कर नयी अवधारणा स्थापित करना। मूलतः प्रयोगवाद उन प्रवृत्तियों की ओर संकेत करता है, जिसकी ओर अज्ञेय ने 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में प्रयोगवाद नाम के स्पष्टीकरण में कहा कि 'प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है बल्कि वह साधन ही नहीं दोहरा साधन है। वह एक ओर तो सत्य को जानने का साधन है, दूसरी तरफ वह उस साधन को भी जानने समझने का साधन है।' तीसरा सप्तक (1959 ई0) नयी कविता का प्रतिनिधि संग्रह माना जाता है। नयी

कविता में नयेपन की पहचान कविता में आधुनिकता, प्रयोगषीलता, नयी काव्य भाषा, वस्तु और रूप की नवीनता से होती है। 'कलगी बाजरे की' कविता अज्ञेय के समग्र आधुनिक दृष्टिकोण, प्रयोगषीलता, नया विषयवस्तु, नये कथ्य, नयी भाषा, नये रूप और नये रंग–ढ़ंग को प्रदर्षित करती है। अज्ञेय इस कविता के माध्यम से बतलाते हैं कि कविता कैसी होनी चाहिए ? उनका विरोध कहां और क्यों है ? वैयक्तिकता तथा सामाजिकता के द्वन्द्व के संबंधों का सरोकार कहां और क्यों है ?

प्रयोगवाद में षिल्प और संवेदना के स्तर पर प्रायः नवीन प्रयोग मिलते हैं। प्रयोगवादी साहित्य में पहली बार समाज से हटकर व्यक्ति, उसका व्यक्तित्व, अस्तित्व, उसकी अस्मिता या अपनेपन की पहचान की चिन्ता की गयी है। इसमें क्षण को अप्रत्याषित महत्त्व देकर जीवन को भरपूर या समग्रता में जीने पर बल दिया गया है। प्रयोगवादी कवि वैयक्तिक प्रेम या मानव प्रेम को सहज भाव से स्वीकृत करता है। प्रयोगवाद से नयी कविता में बदलाव को 1949 ई0 में प्रकाषित 'हरी घास पर क्षणभर' नामक कविता संग्रह रेखांकित करता है। इस संग्रह की कविताओं में रोमांटिक और आधुनिक स्वभाव का द्वन्द्व स्पष्ट दिखता है। इसमें अनुभूति और संवेदना की गहराई प्रकट होती है। इस संग्रह की कविताओं की खास बात यह है कि इसमें नयी कविता आंदोलन की जड़ें मौजूद है और प्रयोगवादी कविता से इतर नयी कविता की परिपक्वता दिखलायी पड़ती है।

'तार सप्तक' का संपादन कर अज्ञेय ने एक ऐतिहासिक काम किया। उन्होंने एक नये अनुभव के साथ नयी आधुनिक प्रयोगवादी कविता की परंपरा को जन्म दिया और सर्वथा एक नये इतिहास का सृजन किया। इस नयी आधुनिकता कविता के ट्रेन्ड में समाज की जगह व्यक्ति पहले स्तर पर महत्त्वपूर्ण हुआ और समाज दूसरे स्तर पर। भारत की आजादी के पूर्व ही प्रौद्योगिकीवादी और पूँजीवादी प्रवृत्तियों ने अपना प्रसार आरंभ कर दिया था। अमेरिकी वर्चस्ववाद के दबाव में साम्यवाद और वामपंथ की कमर पूरी तरह टूट गयी और वह साहित्य की मुख्यधारा से अलग हो गया। साम्यवादी और समाजवादी अभिव्यक्ति का कोई औचित्य नहीं था। साम्यवाद और सामाजिकता के दबाव में व्यक्ति, उसका व्यक्तित्व, वजूद और आइडेन्टिटी सभी खतरे में पड़ गया था। अस्तित्ववादी दर्षन, मनोविष्लेषण और डार्विन के विकासवादी दर्षन का डंका बज रहा था। ऐसे में अज्ञेय ने व्यक्ति को सामाजिक जकड़न से निकालकर उसके व्यक्तित्व, अस्तित्व और समाज में उसकी अस्मिता की पहचान करायी। इस नये युगधर्म का निर्वाह प्रयोगवाद और नयी कविता ने बखूबी किया है।

अज्ञेय इतिहास विधायक रचनाकार हैं। इतिहास निर्माता रचनाकार की अपनी एक अलग दृष्टि और पहचान होती है। साहित्य के सामाजिक संबंधों में आये बदलाव की पहचान करते हुए अज्ञेय ने बड़ी गंभीरता से द्वितीय विष्वयुद्ध के त्रासद परिणाम तथा उपनिवेषवादी, साम्राज्यवादी और पूँजीवादी वर्चस्व और उसकी अहंवादी बर्बरता और आतंक को महसूस किया और उसके बारे में खुलकर अभिव्यक्ति दी। इस समय वामपंथी रूझान और पार्टीबद्ध लेखन की जरूरत नहीं थी, बल्कि व्यक्ति को आत्मबोध, व्यक्तित्व, अस्तित्व, व्यक्ति स्वातंत्र्य और आइडेन्टिटी की जरूरत थी, अज्ञेय ने उसकी खोज की और अपनी रचना में उसे पर्याप्त स्थान दिया। इसके कारण उनकी व्यापक आलोचना हुई।

प्रयोगवाद और नयी कविता के भीतर एक और प्रवृत्ति विकसित थी जो उनसे भिन्न थी। जैसे मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना और अन्य कवियों में दुष्यंत कुमार, धूमिल, नागार्जुन आदि की कविताएं यथार्थवादी ढ़ंग व समाजवादी पैटर्न को ग्रहण किया।

दिनांक : 16/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**